Hornbill Classes

PRELIMS

TOOL KIT SERIES

MPPSC

MADHYA PRADESH

STATE FOREST SERVICE

2026 - 27

Detailed Syllabus Based study material + Linkage of Concepts with PYQs + Infused with Infographics & Maps

Rank – 1
Shashank Jain
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 3
Jyoti Thakur
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 4
Shivam Gautam
Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank – 5
Nitin Patel
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Ravi Kumar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 7
Ankur Gupta
Comprehensive Forestry Course + Test Series

Rank – 8
Deependra Lodhi
Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank – 9
Kapil Chauhan
Comprehensive Forestry Course

Rank – 10
Alok Kumar Jhariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 11
Tarun Chouhan
Test Series + Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank – 12
Raghvendra Thakur
Comprehensive Forestry Course + CIGP

11 Out of **12** Total Selections in
Assistant Conservator of Forest (ACF) – 2023

ATTENTION please

APR 01

Pre – Cum – ***Main*** – Cum – ***Interview*** Integrated Batch

Gwalior
Adarsh Colony, Gole ka Mandir, Gwalior (M.P.) 474005
+91 7223970423

MPPSC

प्राचीन भारत

STATE CIVIL / FOREST SERVICE

EDITION : 2026

+917223970423 Hornbillclasses.com

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

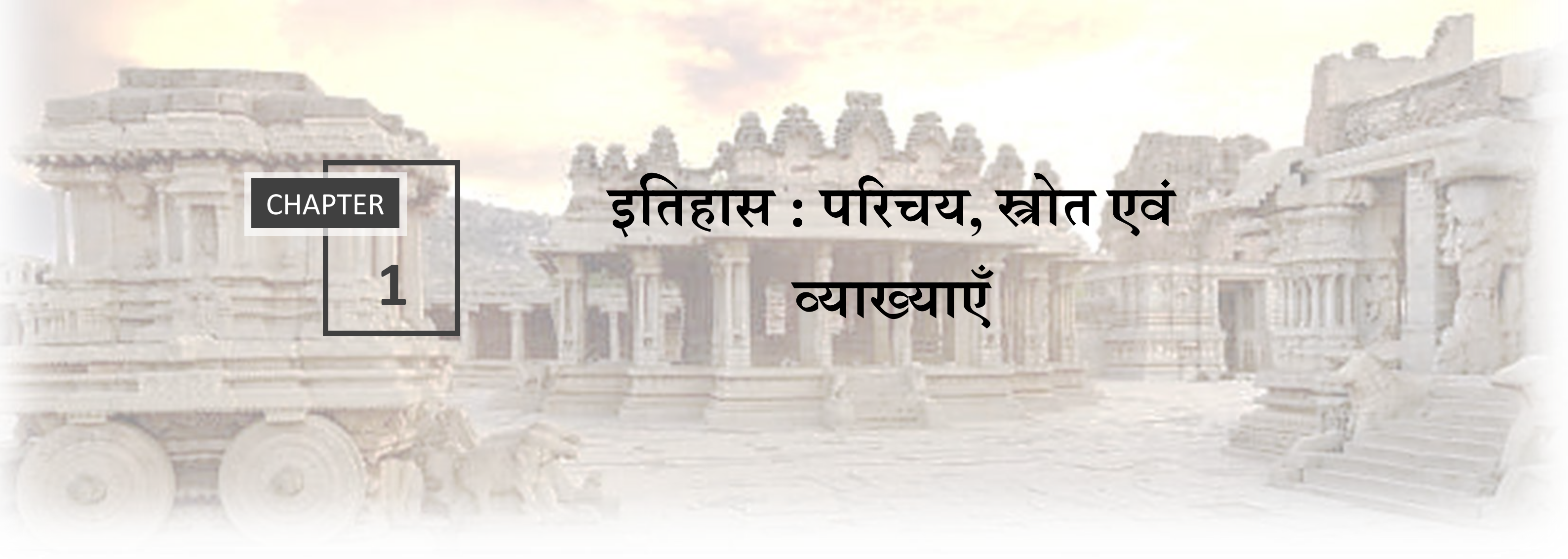

CHAPTER 1

इतिहास : परिचय, स्त्रोत एवं व्याख्याएँ

इतिहास एक ऐसी विधा (Discipline) है, जो भूतकाल मे लोगों द्वारा किए गए अनुभवों को परखती (Examine The Past Experiences) है, और वर्तमान के लिए उदाहरण प्रस्तुत करती है। भारत का इतिहास सहस्राब्दियों से बुना हुआ एक समृद्ध चित्रपट (Rich Tapestry Woven Over Millennia) है, जिसे विविध संस्कृतियों, साम्राज्यों और बौद्धिक उपलब्धियों द्वारा आकार दिया गया है (Shaped by diverse cultures, empires and intellectual achievements)। बहुत समय तक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम एवं ब्रिटिश काल में बांटने का प्रयास किया है, परंतु सम्यक अवलोकन (Proper observation) के पश्चात यह विभाजन भ्रामक (Misleading) ही लगता है। इसी करण अधिकांश इतिहासविदों ने इसे प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में विभाजित किया है, और यह विभाजन, पाठ्यकर्ता को सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों (Socio-Economic Changes) को देखने का अवसर देता है।

इतिहास को पुनः तीन भागों में विभाजित किया जाता है- प्राक्-इतिहास, आद्य-इतिहास और इतिहास (Pre-history, Proto history & History)। प्राक् इतिहास (3000 ईसा पूर्व से पहले), अर्थात वह काल जब मानव अस्तित्व तो था, परंतु लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था। आद्य-इतिहास (3000 – 600 ईसा पूर्व), अर्थात वह काल जिसके लिखित साक्ष्य तो मिले, परंतु उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका और इतिहास (600 ईसा पूर्व के बाद), अर्थात वह काल, जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं, और जिन्हें पढ़कर उस कालखण्ड के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है।

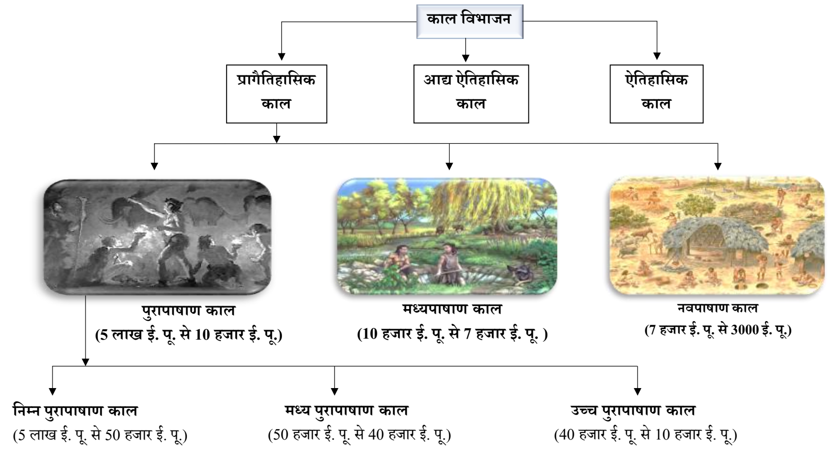

1.1 भारतीय इतिहास की विभिन्न व्याख्याएँ :

औपनिवेशिक दृष्टिकोण : 18 वीं – 19 वीं शताब्दी के यूरोपीय विद्वानों द्वारा इतिहास की व्याख्या को औपनिवेशिक दृष्टिकोण कहा जाता है। भारतीयों के व्यवहार एवं सामाजिक व्यवस्था (Behavior and social order) को समझने के लिए, धर्मांतरण को बढ़ावा देने के लिए, तथा प्राचीन धार्मिक विकारों (Religious disorders) को उजागर करने के लिए पश्चिमी विद्वानों (प्राच्यवादी और आंग्लवादी / Orientalists and Anglicists दोनों) ने विभिन्न प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद व्यापक पैमाने पर किया एवं अपनी धारणाएँ प्रस्तुत कीं। इस दिशा मे मुख्य प्रयास 1784 में विलियम जॉन्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना के बाद हुआ। इसके अलावा जर्मन विद्वान मैक्स म्यूलर के सम्पादन में भी कई ग्रंथों का अनुवाद पूर्वी पवित्र ग्रंथ माला (*Sacred Book of the East Series*) नाम से प्रकाशित किया गया। भारतीय

❖ ऋग्वेद में लगभग 25 नदियों का उल्लेख किया गया है, जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिन्धु का वर्णन सर्वाधिक है। सबसे पवित्र नदी (Holy river) सरस्वती को माना गया है। इसमें गंगा का प्रयोग एक बार तथा यमुना का प्रयोग तीन बार हुआ है। वेदों की कई शाखाएं (Branches) हैं, जो वेदों से जुड़ी विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत करती हैं, उदाहरण – ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ थीं, किन्तु आज केवल शाकल, आश्वलायन एवं शांखायन शाखा ही मिलती हैं।

❖ सूर्य (सवितृ) को सम्बोधित गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में उल्लेखित है, तथा औषधियों के देवता सोम का उल्लेख इसके 9 वें मण्डल में है। मन्यु (क्रोध) के रूप में अमूर्त देवता (Abstract god) की भी प्रार्थना की गई है। कई मण्डलों में एक-एक गोत्र या वंश के ऋषियों की रचनाएँ हैं, इसलिए इनको वंश-मण्डल भी कहा जाता है।

चारों वेद

❖ ऋग्वेद के अनुशीलन (Consistent practice) से तात्कालिक आर्यों और दासों के जीवन के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। 7 वें मण्डल में दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन किया गया है, यहीं दोनों के परस्पर संघर्ष का वर्णन मिलता है।

❖ ऋग्वेद के सूक्तों में भिन्न-भिन्न विषयों का वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए – पुरुषसूक्त में चारों वर्णों का उल्लेख है, नासदीय सूक्त में निर्गुण ब्रह्म तथा सृष्टि की उत्पत्ति की पूर्व अवस्था का चित्रण है, विवाह सूक्त में विवाहोपरांत स्त्री के कार्यों का वर्णन है, जिसमें स्त्री को साम्राज्ञी कहा गया है, हिरण्यगर्भ सूक्त में हिरण्यगर्भ देवता (चराचर का स्वामी) को हवि (आहूति) अर्पित करने संबंधी चर्चा की गई है। ये चारों सूक्त 10 वें मण्डल में वर्णित हैं।

❖ ऋग्वेद के विभिन्न मण्डलों में कुछ प्रमुख संवाद सूक्त हैं, जिन्हें नाटकों का प्रारम्भिक रूप भी कहा जाता है। इनमें दो व्यक्तियों के बीच वार्तालाप शैली (Conversational style) में विषय को प्रस्तुत किया गया है। जैसे, पहले मण्डल में अगस्त्य – लोपमुद्रा संवाद, तीसरे मण्डल में विश्वामित्र – नदी (विपाशा व शतुद्रि) संवाद, सातवें मण्डल में वशिष्ट – सुदास संवाद, दसवें मण्डल में क्रमशः यम-यमी, पुरुवा-उर्वशी, इन्द्र-इंद्राणी, सरमा-पणि आदि संवाद वर्णित हैं।

❖ ऋग्वेद संहिता में लौकिक विषयों (Worldly affairs) पर भी ऋषियों की दृष्टि पड़ी है। इसमें द्यूत-क्रीड़ा के दोष, मण्डूकों की ध्वनि, विवाह की विधि, दान की महिमा, 4 समुद्रों (अपरा, पूर्व, सारस्वत तथा शयर्णावत) इत्यादि विषयों का भी उल्लेख है।

यजुर्वेद :

❖ यजुर्वेद अपने स्वरूप में ऋग्वेद और सामवेद संहिताओं से बिल्कुल अलग है। यह मुख्यतः गद्य रूप (Prose form) में है, तथा कुछ भाग पद्य रूप (Verse form) में है। यजुर्वेद में 'यजुष्' शब्द की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की गई है। एक परिभाषा के अनुसार "यजुः वह है जो गद्य रूप में हो"। एक अन्य परिभाषा – 'यजुर यजाते:' में इसका संबंध यज्ञ से बताया गया है, क्योंकि दोनों ही शब्द मूल यज से निकले हैं।

★ **पूर्व मीमांसा** : कर्मकांड, यज्ञ आधारित (Performance of rituals) इस दर्शन के प्रतिपादन में आचार्य जैमिनी का नाम प्रमुख है। मीमांसा के अनुसार वेदों में कही गई बातें सदा सत्य हैं। यह पुरोहितवाद तथा बाह्य आडंबर (External ostentation) को बढ़ावा देने वाला दर्शन है। यह दर्शन वेद को स्वतः प्रमाण, अपौरुषेय एवं नित्य (Self-evident, godly and eternal) मानता है। मीमांसा दर्शन यह स्वीकार करता है कि आत्मा मृत्यु के उपरान्त भी विद्यमान रहती है, और स्वर्ग में कर्मों का फल भोग करती है। कोई ऐसी शक्ति हैं जो कर्मों के फल को सुरक्षित रखती है। मीमांसक इसे 'अपूर्व' की संज्ञा देते हैं।

★ **उत्तर मीमांसा** : ईसा-पूर्व दूसरी सदी में संकलित बादरायण का ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है। इसे वेदान्त भी कहते हैं। बाद में इस पर दो प्रख्यात भाष्य (Commentary) शंकराचार्य (9वीं सदी) और रामानुज (12वीं सदी) द्वारा लिखे गए। अद्वैत वेदान्त के प्रणेता आदि शङ्कराचार्य हैं। उनकी प्रसिद्ध उक्ति है- "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवोब्रह्मैवनापरः" अर्थात् एक मात्र सत्य ब्रह्म (आत्मा) है। आचार्य शङ्कर के अनुसार यह 'ब्रह्म' सर्वव्यापी और चेतन है। शङ्कर ने जगत् को पूर्णतः सत्य नहीं माना है। उनके मतानुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत्य (Ultimate Truth) है, शेष सभी वस्तुएँ ईश्वर, जीव, जगत् प्रपञ्च (Delusion) है।

स्मृतियाँ : स्मृति भारतीय परंपरा के वे ग्रंथ हैं, जो किसी ऋषि के द्वारा आचार संहिता और विधि विधान (Code of Conduct and Laws) के रूप में लिखे गए हैं या फिर से संकलित किए गए हैं। माना जाता है कि परंपरा का संकलन (compilation of tradition) किए जाने के कारण इन्हें स्मृति का नाम दिया गया। आचार-व्यवहार की शिक्षा के लिए वैदिक धर्म-सूत्रों पर आश्रित अनेक स्मृतियाँ लिखी गईं। इनमें वर्णाश्रम व्यवस्था, राजा के कर्त्तव्य, विवाद का निर्णय आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। ये एक प्रकार से सामाजिक धर्मशास्त्र (Social theology) हैं। इन स्मृतियों के आधार पर ही हिन्दुओं के दीवानी और फौजदारी कानून बने हुए हैं। प्राचीन स्मृतियों के बहुत से नियम आज अपना अर्थ और महत्त्व खो चुके हैं। विभिन्न ग्रंथों में अनेक स्मृतियों का उल्लेख मिलता है, जिनमें 18 मुख्य स्मृतियाँ मानी गई हैं।

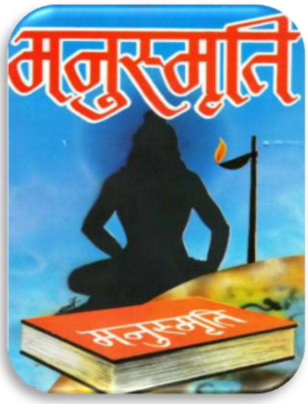

स्मृति-ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्व मनुस्मृति का है। इसमें 12 अध्याय हैं, जिनमें सभी स्मृतियों की अपेक्षा अधिक व्यापक विषयवस्तु वर्णित है। सृष्टि से आरंभ करके मानव समाज के विकास तथा संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म व प्रायश्चित आदि विषयों इसमें विवेचन है। मनु को सभी मानवों का पिता कहा गया है। उन्होंने जीवन की व्यवस्था के लिए अपने नियम दिए हैं। पी वी काणे के अनुसार यह ग्रंथ एक व्यक्ति की रचना नहीं है। इसे ब्रह्मा से मनु ने, फिर मनु से भृगु ऋषि ने तथा उनसे मेधातिथि ने प्राप्त किया।

याज्ञवल्क्यस्मृति में अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील विचार (Progressive Thoughts) दिए गए हैं। इसमें तीन अध्याय हैं-आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त। इस पर मिताक्षरा व्याख्या सुप्रसिद्ध है, जिसे हिन्दुओं के कुछ वर्गों में सर्वाधिक प्रमाणिक माना जाता है। नारदस्मृति, विष्णुस्मृति, व्यासस्मृति, वशिष्टस्मृति, बृहस्पति स्मृति आदि अन्य स्मृतियाँ हैं।

1.5 ऋत, सभा, समिति तथा गणतंत्र :

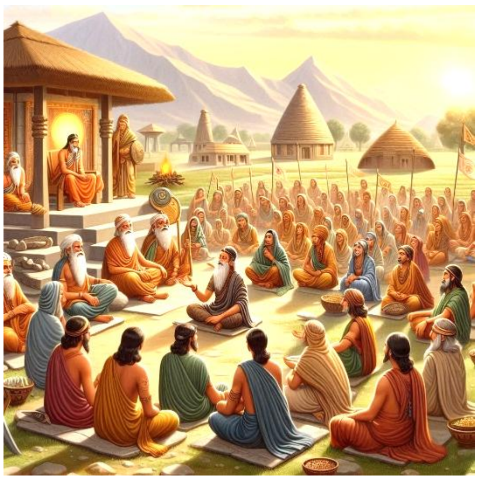

वैदिक साहित्य में ऋत शब्द का प्रयोग सृष्टि के सर्वमान्य नियम/ ब्रह्माण्ड के नियम (Cosmic order) के लिए हुआ है। संसार में सभी पदार्थ ऋत के नियमों से बँधे हुए हैं तथा सूर्य, चन्द्रमा, तारे, दिन ,रात आदि इसी नियम द्वारा संचालित हैं। संभवतः, ऋत शब्द का प्रयोग पहले भौतिक नियमों (Physical laws) के लिए किया गया था लेकिन बाद में ऋत के अर्थ में आचरण संबंधी नियमों का भी समावेश हो गया। ऋत को सबका मूल कारण माना गया है, अतः ऋग्वेद में मरुत् को ऋत से उद्भूत (Emerged) माना है। विष्णु को 'ऋत का गर्भ' माना गया है। द्यौ और पृथ्वी ऋत पर स्थित हैं। उषा और सूर्य को ऋत का पालन करनेवाला कहा गया है। वरुण, जो पहले भौतिक नियमों के रक्षक कहे जाते थे, बाद में 'ऋत के रक्षक' (ऋतस्य गोप) के रूप में ऋग्वेद में वर्णित किए गए हैं; साथ ही उन्हें ऋत की ज्योति का रक्षक (ऋतस्य

© Hornbill classes
+91 78802-71423 Hornbillclasses@gmail.com

- **वेदारम्भ** : इस संस्कार का प्रथम उल्लेख व्याससमृति में मिलता है। इस संस्कार का एक अन्य नाम प्राइषार्थ भी मिलता है। इसे वेदों के अध्ययन को प्रारंभ करने (To start studying the Vedas) के लिए निर्धारित किया गया था और एक स्वतंत्र संस्कार के रूप में मान्यता प्राप्त थी।
  उपनयन के बाद, किसी शुभ दिन (Auspicious Day) वेदारम्भ संस्कार संपन्न किया जाता था, जिसमें विभिन्न वेदों के अध्ययन के अनुसार भिन्न-भिन्न विधियाँ अपनाई जाती थीं। इस संस्कार के पूर्ण होने के बाद आचार्य ब्रह्मचारी को वेद अध्ययन कराना आरंभ करता था।
- **केशांत** : यह संस्कार सोलह वर्ष की आयु में सम्पन्न होता था, जब ब्रह्मचारी युवावस्था (Growing up) की ओर बढ़ रहा होता था। इसमें ब्रह्मचारी के सर के बाल तथा श्मश्रुओं (दाढ़ी-मूंछ) का प्रथम मुण्डन (First Beard cutting) किया जाता था। इस संस्कार के माध्यम से उसे पुनः ब्रह्मचर्य के व्रतों का स्मरण (Remembrance of codes) कराया जाता था। इस संस्कार को गोदान के नाम से भी जाना जाता था, क्योंकि इस अवसर पर आचार्य को गाय का दान (Donation of cow) किया जाता था।

- **समावर्तन** : ब्रह्मचर्य की समाप्ति (End of brahmacharya) पर इस संस्कार का आयोजन किया जाता था, जिसे स्नान के नाम से भी जाना जाता था। शिक्षा पूर्ण होने के बाद ब्रह्मचारी के गुरुकुल से घर लौटने से पूर्व यह संस्कार संपन्न किया जाता था। केवल उन्हीं स्नातकों का समावर्तन संस्कार होता था, जिन्होंने अध्ययन समाप्त कर लिया हो और सभी दीक्षित व्रतों का पालन (Observance of the Vows) किया हो। समावर्तन से पहले ब्रह्मचारी को गुरु की अनुमति लेना आवश्यक होता था। साथ ही, वह अपनी क्षमता के अनुसार गुरु को दक्षिणा अर्पित (Offer Dakshina) करता था। गुरु की अनुमति मिलने के पश्चात, वह अपने घर लौटकर सुलक्षणा कन्या (Lady having good characteristics) से विवाह करता था।
- **विवाह** : विवाह को सबसे महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है, क्योंकि यह समस्त आश्रमों का मूल (Root of ashrams) तथा सभी गृहयज्ञों और संस्कारों का उद्गम स्थल (Origin Place) है। स्वयं विवाह भी एक यज्ञ के समान है, और पत्नीरहित व्यक्ति को यज्ञ करने का अधिकार नहीं होता। यह एक अति प्राचीन संस्कार है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। ऋग्वैदिक काल में विवाह को एक दृढ़ संस्कार के रूप में स्थापित किया जा चुका था। **ऋषि श्वेतकेतु** का एक संदर्भ वैदिक साहित्य में आया है, कि उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए विवाह प्रणाली की स्थापना की और तभी से कुटुंब व्यवस्था का प्रारंभ हुआ।
  विवाह का शाब्दिक अर्थ है – उत्तरदायित्व का वहन करना (To bear responsibility)। पाणिग्रहण संस्कार को सामान्य रूप से 'हिन्दू विवाह' के नाम से जाना जाता है। अन्य धर्मों में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार (Agreement) होता है, जिसे विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता है। परंतु हिन्दू विवाह पति और पत्नी के बीच जन्म-जन्मांतरों का सम्बंध (Relation of birth and rebirth) होता है, जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं तोड़ा जा सकता। अग्नि के सात फेरे लेकर और ध्रुव तारे को साक्षी मान कर (With the Pole Star as witness) दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन (Sacred bond) में बंध जाते हैं।

  स्मृतियों में विवाह के आठ प्रकार बताए गए हैं – ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच। इन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है, प्रशस्त (श्रेष्ठ) और अप्रशस्त (अवांछनीय/ Undesirable)। ब्राह्म, दैव, आर्ष और प्राजापत्य विवाह को प्रशस्त माना गया है, जबकि आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच विवाह को अप्रशस्त श्रेणी में रखा गया है।

1) ऋषभदेव – वृषभ पुण्डरीक	9) पुष्पदन्त – मगरमच्छ वाराहक	17) कुन्थुनाथ – बकरी संबा
2) अजितनाथ – गज सिंहसेना	10) शीतलनाथ – कल्पवृक्ष	18) अरहनाथ – मछली कुम्भ
3) संभवनाथ – अश्व चारू	11) श्रेयान्सनाथ – गैंडा कश्यप	19) मल्लिनाथ – कलश अभिक्षक
4) अभिनंदन – कपि वज्रनाभा	12) वासुपुज्य – भैंस सुभूमा	20) मुनिसुव्रतनाथ – कछुआ मल्लि
5) सुमतिनाथ – क्रौंच	13) विमलनाथ – सूअर मंडरा	21) नमिनाथ – नीलकमल शुभ
6) पद्मप्रभु – कमल प्रद्योतना	14) अनन्तनाथ – सेही जस/ फाल्कन	22) अरिष्टनेमि – शंख वारादत्ता
7) सुपार्श्वनाथ – स्वस्तिक विदिर्भा	15) धर्मनाथ – वज्रदण्ड अरिष्ट	23) पार्श्वनाथ – सर्प आर्यदिन्ना
8) चन्द्रप्रभु – चन्द्रमा दिन्ना	16) शांतिनाथ – हिरण चक्रयुद्ध	24) महावीर – सिंह इन्द्रभूति

1.10 पाषाणकाल (Stone Age) :

मानव जीवन के विकास क्रम में आस्ट्रेलोपिथेकस (Australopithecus) नामक प्राणी का जन्म एक महत्वपूर्ण घटना थी, जो लगभग 55 लाख से 15 लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका में विकसित हुआ। ये प्राणी दो पाँव और घड़े के आकार के पेट वाले थे, जिनके मस्तिष्क का आकार 400 घन सेंटीमीटर था। इस प्रजाति को आद्य मानव (Primitive human) भी कहा जाता है। इसके पश्चात होमो हॉबिलिस से होते हुए होमो इरेक्टस एवं उसके बाद होमो सेपीयन्स का उद्भव हुआ। होमो सेपीयन्स का अर्थ है बुद्धिमान व्यक्ति, जिससे हमारी वर्तमान प्रजाति विकसित हुई है। पूर्ण विकसित मानव की प्रजाति लगभग 1 लाख 15 हजार वर्ष पूर्व दक्षिणी अफ्रीका में पाषाण युग के आखिरी काल में पाई गयी।

भारतीय उपमहाद्वीप में मानव विकास से संबंधित जीवाश्म (Hominid) अवशेष कम ही प्राप्त हुए हैं। 19 वीं सदी में शिवालिक हिमालय तथा पोतवार पठार (पाकिस्तान) से नर – वानरों (Primates) के अवशेष पाए गए हैं, जिन्हे रामापिथेकस, शिवापिथेकस आदि संज्ञाएँ दी गई हैं। इन जीवाश्मों की तिथि 100 से 140 लाख वर्ष पूर्व मानी गई है, जो मायोसीन से प्लायोसीन के बीच का काल है। मध्यभारत से प्राप्त अवशेषों में सबसे प्राचीन नर्मदा घाटी में स्थित, होशंगाबाद (नर्मदापुरम) जिले के हथनोरा से खोजा गया, जब 1982 में अरुण सोनकिया वहाँ सर्वेक्षण कर रहे थे। इस अवशेष को 'होमो इरेक्टस नर्मदेनसिस' नाम दिया गया एवं इसकी तिथि 5 लाख वर्ष पूर्व की मानी गई।

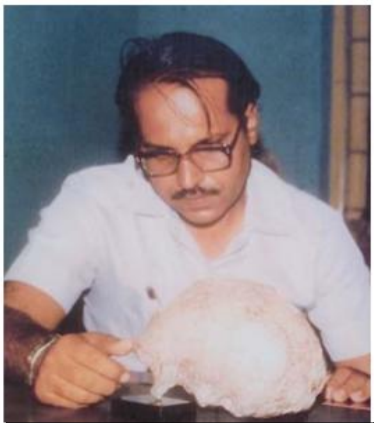

हथनोरा से प्राप्त कपाल के एक खोल के साथ अरुण सोनकिया

भारतीय पाषाण काल को भू-वैज्ञानिक युग, औजार के प्रकार तथा तकनीक और जीवन निर्वाह की पद्धति में परिवर्तन के आधार पर पुरापाषाण, मध्य पाषाण एवं नव पाषाण युग मे बाँटा गया है। सामान्य तौर पर पुरापाषाण संस्कृतियाँ प्लीस्टोसीन युग तथा मध्य एवं नवपाषाण संस्कृतियाँ होलोसीन युग की मानी जाती हैं। 18-19 वीं शताब्दी में कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से डेनमार्क के विद्वान पी.एफ. सुह्म तथा क्रिश्चियन टौम्सन (**थॉमसन**) ने पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन (Triage division) किया था।

पाषाणकाल	भू-वैज्ञानिक युग	औजारों का भारतीय प्रकार	जीवन पद्धति / शैली
निम्न पुरापाषाण	निम्न प्लीस्टोसीन	कोर औजार जैसे हस्त कुठार क्लीवर तथा चॉपिंग औजार	आखेट तथा संग्रहण
मध्य पुरापाषाण	मध्य प्लीस्टोसीन	फ्लेक औजार (लेवालाइस तकनीक से बने), फलक संस्कृति	आखेट तथा संग्रहण
उच्च पुरापाषाण	उच्च प्लीस्टोसीन	फ्लेक पर बने ब्लैड जैसे समांतर फलक ब्लैड और ब्यूरिन	आखेट तथा संग्रहण
मध्य पाषाण	होलोसीन	माइक्रोलिथ या सूक्ष्म औजार	आखेट, संग्रहण, मछली पकड़ना तथा पशुपालन आरंभ
नवपाषाण	होलोसीन	सेल्ट चमकीले हस्त कुठार और पुरा कुठार	पशुपालन और कृषि पर आधारित खाद्यान्न उत्पादन

गंगा के मैदानी भागों के उत्खनन से भी इस काल के साक्ष्य प्राप्त होते हैं,जहाँ नूतन काल (Pleistocene) में, जलवायवीय शुष्कता के चलते, विंध्य क्षेत्र से प्रवजन (Migration) हुआ था। उत्तर प्रदेश के **लहुरादेव** नामक स्थान से रस्सी की छाप वाले लाल मृद्भांड और लाल-काले मृद्भांड पाए गए हैं। ज्यादातर मिट्टी के बर्तन हस्तनिर्मित हैं, परंतु कुछ चाकनिर्मित बर्तन भी मिले हैं। मिट्टी के कुछ पके हुए टुकड़ों से लगता है कि लोग भीत के घरों (Wall houses) में रहते थे। पौधों के अवशेष में धान तथा कुछ जंगली घासों के अंश प्राप्त हुए हैं। बर्तन के ठीकरों के अंदर धान की भूसी फंसे होने के निशान मिले हैं। यह धान उगाए गए प्रजाति का लगता है। लहुरादेव की अंशशोधित तिथि 6ठी से 5वी सहस्राब्दि ईसा पूर्व के बीच मानी गई है।

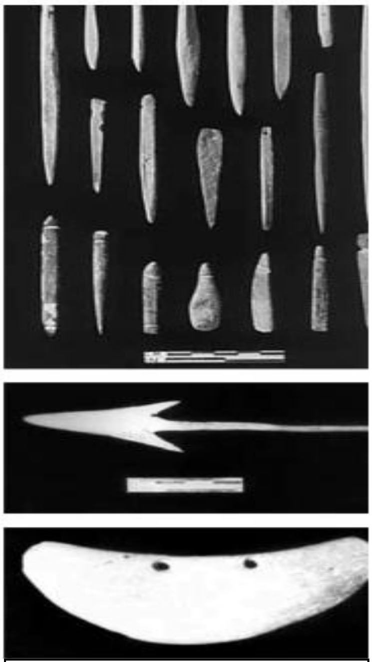

बुर्जहोम- हड्डी के औजार : सुई, तीराग्र, हार्वेस्टर (ऊपर से नीचे)

दक्षिण भारतीय नवपाषाण केंद्रों का तिथिक्रम 2900-1000 ईसा पूर्व के बीच निर्धारित किया गया है। इनमें उतनूर (आंध्रप्रदेश), बुदीहाल, कोडेकाल, वाटगल, पिकलीहल, संगनाकल्लु (राख का टीला) (सभी कर्नाटक), पैयमपल्ली (तमिलनाडु) आदि आते हैं। **उतनुर** के अध्ययन से पता चलता है कि इस स्थान पर लकड़ी की घेराबन्दी वाले बाड़े कई बार बनाए गए थे तथा इनमें उतनी ही बार एकत्रित गोबर के ढेर को जलाया जाता था। पशुधन के खुरों के निशान राख की ढेर में मिले हैं। उतनुर से प्राप्त भौतिक संस्कृति अवशेष पिकलीहल (2100 ईसा पूर्व) तथा कोड्डेकाल से मिलते जुलते हैं।

1.11 ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age) तथा पाषाणयुगीन कला :

नवपाषाण काल के अंत में प्रयोग की जाने वाली पहली धातु तांबा थी, जिसके द्वारा बने औजारों को पत्थर के औजारों के साथ उपयोग करने वाले समूह और उनका समय ताम्र युगीन संस्कृति या ताम्र पाषाण काल कहलाते हैं। ताम्र – पाषाण काल के लोग मुख्यत: ग्रामीण व स्तरीकृत समुदाय (Rural and Stratified Community) थे, जो पहाड़ी भूमि व नदियों के किनारे व्यापक क्षेत्र में फैले हुए थे। इस काल में पहली बार मृद्भांडों को चित्रित (Painted Pottery) किया गया और चमकीले लेप का उपयोग किया गया; साथ ही झरोखेदार मृद्भांड (Fenestrated pottery) भी बनाए गए।

ताम्र पाषाण काल में भेड़, गाय, भैंस, बकरी, और सूअर का पालन किया जाता था। कुछ स्थानों पर ऊंट के अवशेष भी प्राप्त होते हैं, परंतु घोड़े के अवशेष नहीं मिलते। इस युग में लोग कुशल ताम्रकार, हाथीदांत नक्काशीकार, चूना निर्माता और टेराकोटा कारीगर थे।

ताम्रपाषाण काल के किसानों द्वारा बनाए गए घर पत्थर या मिट्टी की ईंटों से निर्मित होते थे। इन घरों का निर्माण एक विशिष्ट प्रतिरूप (Pattern) में किया जाता था, जिसमें गोलाकार या आयताकार घरों की एक पंक्ति होती थी। इस काल की समाधि की परंपराओं में भी व्यापक विविधता देखने को मिलती है। इसमें एकल समाधि, बर्तनों में समाधि, ज़मीन के ऊपर छोटे बक्से के आकार के अस्थि-कक्ष, और चट्टानों को काटकर बनाई गई समाधियाँ शामिल थीं। महाराष्ट्र में उत्तर-दक्षिण दिशा में, दक्षिण भारत में पूर्व-पश्चिम दिशा में शवों को समाधिस्थ (Bury) किया जाता था, जबकि पूर्वी भारत में आंशिक प्रकार की समाधियों के प्रमाण मिले हैं। इस काल का तिथि क्रम 2000 – 700 ईसा पूर्व माना जाता है। इस काल के स्थलों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है –

राजस्थान क्षेत्र : स्थायी ताम्रपाषाण सभ्यता, ताम्र अयस्क से परिपूर्ण क्षेत्रों में ही विकसित हुई। भारत में ये स्थल राजस्थान में सबसे समृद्धतम रूप मे पाए गए जहाँ तांबे का प्रयोग संभवत: 3000 ई. पू. से ही प्रारंभ हो चुका था।

का मानना है कि यह स्थल पत्थर के औजारों का उत्पादन क्षेत्र था। लगभग सभी उपकरण पास की नर्मदा नदी से लाए गए चैल्सेडनी (Chalcedony) से बने थे।

पश्चिमी दक्कन : दक्कन की प्राचीनतम कृषक संस्कृति (Earliest farming culture) **जोरवे संस्कृति** (1400 ईसा पूर्व – 700 ईसा पूर्व) कही जाती है, जो प्रवरा-तापी-गोदावरी घाटियों में फली-फूली। इसके प्रमुख स्थलों में प्रकाश (तापी घाटी), दाईमाबाद (गोदावरी घाटी) और इनामगाँव (भीमा घाटी) और नेवासा हैं। जोरवे संस्कृति को सवालदा संस्कृति भी कहा जाता है, और इसकी पहचान चाक पर बने चॉकलेट रंग के मृदभांडों से की जाती है। ये मृद्भांड बनावट में मोटे हैं, और इन पर गहरा लेप चढ़ा रहता है।

यहाँ से प्राप्त घरों का आकार गोलाकार या अंडाकार था जिस पर छत ढली होती थी। हड्डियों से बने औजार, शंख, ओपल, कार्नेलियन, और टेराकोटा के मनके प्राप्त हुए हैं। उगाए जाने वाले पौधों में बाजरा, चना और मूंग के अवशेष मिले हैं। **दाईमाबाद** (प्रवरा नदी के किनारे) से अन्य सभी वस्तुओं के साथ लिंग के आकार की वस्तु मिली है और गेहूं, दाल, चना इत्यादि के अवशेष पाए गए हैं। **इनामगांव** उत्खनन से अन्न भंडार और डायवर्सन चैनल जैसी संरचनाएं सामने आई हैं, और एक वयस्क कंकाल के साथ चार पैरों वाले कलश जैसी अनोखी कब्रें भी पाई गईं हैं। दक्कन और उसके आस पास भागों में लोग मृतकों को अस्थि – कलश (Ashes urn) में अपने घर के नीचे उत्तर-दक्षिण की स्थिति में रखते थे।

महापाषाण संस्कृति (Megalithic Culture) : शब्द मेगालिथ, ग्रीक शब्दों "मेगास" और "लिथोस" से लिया गया है, जिसका अर्थ "बड़ा" "पत्थर" है। इस प्रकार मेगालिथ का अर्थ होता है – मानव बसाहटों से दूर कब्रिस्तान में पत्थरों के बीच दफनाने की विस्तृत शैली। यह संस्कृति अन्त्येष्टि क्रिया या अन्य अनुष्ठानों के लिए उपयोग किए जाने वाली बड़ी पत्थर संरचनाओं (Large stone formation) द्वारा निर्मित स्मारकों के कारण विशिष्ट है। इन संरचनाओं (कब्रों) में से पशुओं की हड्डियां, लोहे की वस्तुएं व हथियार, मिट्टी के बर्तन, घोड़े से संबंधित वस्तुएँ, कंकाल, तथा सोने और चांदी के आभूषण, मोती आदि के साक्ष्य मिले हैं।

दक्षिण भारत में लौह युग (Iron age) को विशिष्ट दफन प्रथाओं द्वारा चिह्नित किया जाता है जिन्हें **महापाषाण (मेगालिथ)** के रूप में जाना जाता है। रेडियोकार्बन डेटिंग से ज्ञात होता है, कि दक्षिण भारत में लौह युग लगभग 1000 ईसा पूर्व से शुरू हुआ और पहली शताब्दी ईसा पूर्व तक जारी रहा। तमिलनाडु के तिरुनेवेल्ली जिले में आदिचनल्लूर नामक स्थान पर सबसे पहले महापाषाणकालीन स्थल की खुदाई की गई थी। 1975 में कर्नाटक में ब्रह्मगिरी की खुदाई से हमें आरंभिक दक्षिण भारत की संस्कृति को समझने में मदद मिली। मेगालिथिक दफन स्थल (Burial sites), जिसमें सबसे पहले लोहे की वस्तुएं पाई गईं, कर्नाटक के ब्रह्मगिरी में पिकलिहल और हल्लूर में पाए गए थे।

अन्य महापाषाणिक स्थलों में आंध्रप्रदेश के कदंबपुर,अमरावती; केरल के पुलिमट्टु, तेंगक्कल, मरयूर, सेनकोटा; महाराष्ट्र में नागपुर क्षेत्र के आसपास जूनापानी, मध्य प्रदेश के रीवा तथा सिवनी जिले आदि प्रमुख हैं।

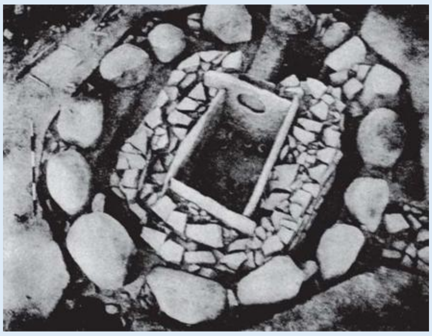

ब्रह्मगिरि का एक महापाषाणिक स्थल

पाषाणयुगीन कला (Stone Age Art) : भारत में प्राप्त पहला शैलचित्र 1867-68 में विंध्य-कैमूर पहाड़ियों में स्थित सोहागीघाट (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश) में पाया गया, जिसकी खोज भारतीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण (ASI) के एक उप-सर्वेक्षक ए.सी.एल. कार्लायल के द्वारा की गई, जो संभवतः, विश्व के किसी क्षेत्र से प्राप्त पहला शैलचित्र (Rock painting) था। आज भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों से लगभग

CHAPTER 1

इतिहास : परिचय, स्त्रोत एवं व्याख्यायें

Previous year Questions (PYQs)

Written Exams Questions

1. 'हिन्दू संस्कारों' पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डालिये। [MPPSC Civil (Main) 2023; 11M]
2. भारतीय वैदिक दर्शन की परंपरागत 6 शाखाओं में किन्हीं दो का उल्लेख कीजिये? [RAS Civil (Main) 2021; 2M]
3. प्रस्थान त्रयी [RAS (Main) 2018; 2M]
4. भारतीय परंपरा में ऋण की अवधारणा पर प्रकाश डालिये ? [RAS Civil (Main) 2013; 5M]
5. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के लिए धर्मशास्त्र ग्रन्थों के महत्त्व का विवेचन कीजिये। [UPPSC History OP 2020, 8M]
6. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों में शिलालेखों का मूल्यांकन कीजिये। [UPPSC History OP 2019, 8M]
7. भारतीय ताम्रपाषाण युग की मुख्य विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। [UPPSC History OP 2019, 8M]

MCQs Type Questions

1. किस वेद में सभा और समिति को पृथक संस्थाओं के रूप में घोषित किया गया है? [MPPSC Civil (Pre) 2024]

(a) ऋग्वेद
(b) सामवेद
(c) अथर्ववेद
(d) यजुर्वेद

2. निम्नलिखित में से कौन-सा वेद सबसे अधिक प्राचीन है? [MPPSC Civil (Pre) 2024]

(a) ऋग्वेद
(b) सामवेद
(c) यजुर्वेद
(d) अथर्ववेद

3. अष्टांग योग के अन्तर्गत किसे अन्तरंग साधना कहा जाता है? [MPPSC Civil (Pre) 2024]

(a) प्रत्याहार
(b) नियम
(c) प्राणायाम
(d) धारणा

4. Robert Bruce Foote, who discovered first Palaeolithic tool in India, was a/an / रॉबर्ट ब्रूस फुट थे, एक- [U.P. Lower Sub. (Pre) 2015]

(a) Geologist / भूगर्भ-वैज्ञानिक
(b) Archaeologist / पुरातत्वविद्
(c) Paleobotanist / पुरावनस्पतिशास्त्री
(d) Historian / इतिहासकार

5. The three-age system, divided into stone, bronze and iron from the collection of Copenhagen Museum was coined by - [UPPSC Civil (Pre) 2010]

कोपेनहेगन संग्रहालय की सामग्री से पाषाण, कांस्य और लौह युग का त्रियुगीय विभाजन किया था

(a) Thomson / थॉमसन
(b) Taylor / टेलर
(c) Lubbock / लुब्बाक ने
(d) Childe / चाइल्ड ने

6. According to the excavated evidence, the domestication of animal began in - [UPPSC Civil (Main) 2006]

उत्खनित प्रमाणों के अनुसार, पशुपालन का प्रारंभ हुआ था -

(a) Lower Palaeolithic period

निचले पूर्वपाषाण काल में
(b) Middle Palaeolithic period
मध्य पूर्वपाषाण काल में
(c) Upper Palaeolithic period
ऊपरी पूर्वपाषाण काल में
(d) Mesolithic period
मध्यपाषाण काल में

7. From which one of the following sites bone implements have been found? [UPPSC Civil (Main) 2010; UP RO/ARO 2013]
निम्नलिखित में से किस स्थल से हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं?
(a) Chopani-Mando / चोपनी मांडो से
(b) Kakoria / काकोरिया से
(c) Mahadaha / महदहा से
(d) Sarai Nahar Rai / सराय नाहर राय से

8. Three human skeletons in a single grave were recovered at – [UPPSC Civil (Pre) 2016]
एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं-
(a) Sarai Nahar Rai / सराय नाहर राय से
(b) Mahadaha / महदहा से
(c) Damdama / दमदमा से
(d) Langhnaj / लंघनाज से

9. Arrange the following Mesolithic sites geographically in order from west to east - [U.P.R.O./A.R.O (Main) 2021]
निम्नलिखित मध्यपाषाणिक स्थलों को भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम से पूर्व के क्रम में व्यवस्थित करें-
1) Paisra / पैसरा
2) Lekhahiya / लेखहिया
3) Birbhanpur / बीरभानपुर
4) Mahdaha / महदहा
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -
(a) 4, 2, 3 और 1
(b) 4, 2, 1 और 3
(c) 1, 4, 3 और 2
(d) 2, 4, 1 और 3

10. From which river valley of India was the first human fossil found? [66th B.P.S.C. Re-Exam 2020]
प्रथम मानव जीवाश्म भारत की किस नदी घाटी से प्राप्त हुआ था?
(a) Ganga River / गंगा नदी
(b) Yamuna valley / यमुना घाटी
(c) Narmada valley / नर्मदा घाटी
(d) Tapti valley / ताप्ती घाटी
(e) None of the above / More than one of the above
उपर्युक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में से एक से अधिक

11. The earliest evidence of agriculture in the Indian Subcontinent has been obtained from – [UPPSC Civil (Main) 2004,2008, 2010; CGPSC Civil (Pre) 2017; 64th BPSC Civil (Pre) 2018]
भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं-
(a) Brahmagiri / ब्रह्मगिरि से
(b) Burzahom / बुर्जहोम से
(c) Lahuradev / लहुरादेव से
(d) Mehargarh / मेहरगढ़ से

व्याख्या : नवीनतम शोध के अनुसार, भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि का सबसे पहला साक्ष्य उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले के लहुरादेव स्थल से प्राप्त हुआ है। इस स्थल पर मानवीय क्रियाकलापों और चावल की खेती की शुरुआत के साक्ष्य लगभग 9000-7000 ईसा पूर्व के हैं। इस शोध से पहले, गेहूं के सबसे पुराने साक्ष्य लगभग 7000 ईसा पूर्व के मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान में स्थित) में पाए गए थे और चावल के सबसे पुराने साक्ष्य प्रयागराज जिले में बेलन नदी के तट के पास पाए गए थे, जहाँ से 6500 ईसा पूर्व के चावल की भूसी मिली थी। उपरोक्त संदर्भ के साथ, यदि लहुरादेव एक विकल्प है, तो यह सही उत्तर होगा, लेकिन यदि लहुरादेव एक विकल्प नहीं है, तो मेहरगढ़ सही उत्तर होगा।

12. From which of the following places is evidence of animal husbandry found in the Mesolithic period? [UPPSC Civil (Pre) 2018]
निम्नलिखित में से किन स्थानों से मध्यपाषाण काल में पशुपालन के प्रमाण मिलते हैं?
(a) Aude / औदे
(b) Bagor / बागोर
(c) Bori / बोरी
(d) Lakhaniya / लखनियां

13. Consider the following statements pertaining to the Ahar Civilization [R.A.S./R.T.S. (Pre) 2021]
आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए-

Congratulations

To all our successful candidates in

MPPSC STATE FOREST SERVICE 2023

Range Forest Officer (RFO) 2023

Rank – 1
Arvind Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 2
Pushpendra Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 3
Narendra Gunare
Test Series + Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank – 4
Jitendra Kumar Verma
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 5
Jaishrish Barethiya
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 6
Bhavna Sehariya
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 7
Pradeep Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 8
Anil Kumar Gour
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank – 9
Aakash Kumar Malviya
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank - 11
Rajesh Kumar Jatav
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank - 12
Veerendra Prajapati
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 13
Dinesh Kumar
Test Series

Rank - 14
Niranjan Dehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 15
Abhinay Chouhan
Test Series

Rank - 18
Sher Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank - 19
Pradeep Jatav
Comprehensive Forestry Course + Test Series + CIGP

Rank - 21
Amit Sisodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank - 22
Abhishek Barodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme (CIGP)

Rank - 24
Golu Goyal
Test Series + Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 25
Pawan Raje
Test Series + Comprehensive Interview Guidance Programme

Our Ranks Holders in 2023

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 11, 12, 13, 14, 15, 18, 19, 21, 22, 24, 25, 27, 28, 29, 31, 32, 33, 34, 36, 37, 41, 42, 44, 45, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 65, 66, 67, 69, 70, 71, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 86, 98, 99, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126

108 Out of **126** Total Selections in

Range Forest Officer (RFO) 2023

Online / Offline Batches

Comprehensive syllabus coverage and detailed analysis of PYQs

- Both online / Offline batches
- 2 years of validity with unlimited access.

Study Material

- PYQs and syllabus-based
- Color printed
- Generous use of visual Graphics
- Align with the latest trends and requirements of the exam

Test Series

Personalized feedback with detailed solutions and suggestions for each candidate, ensuring targeted improvement and success in exams.

Leader In Forest Services

A premier institute specializing in forest service exams, including IFoS, ACF, RFO, and ICFRE / ICAR–(ASRB) ARS/NET Examinations.